पाश्चात्य भाषाओं का हिन्दी पर प्रभाव

डा. नरेश मोहन, हिन्दी विभाग
बी.एच.ई.एल., हरिद्वार

भाषा कोई भी हो अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम होती है। भाषा सभ्यता, संस्कृति एवं मनोविचारों का बिम्ब होती है, भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर अनुकूलताओं से भाषान्तरण हुआ माना जाता है तथापि मानव जाति समान होने के कारण मनुष्य एवं उसके परिवेश की प्रभावशीलता उसकी मनोकूलता एवं इन्द्रियों और कर्मन्द्रियों से अनुभव किया गया ज्ञान समान होता है। यही कारण है कि भाषायी अन्तर होने पर भी प्रत्येक भाषा एक-दूसरे से न केवल सम्बन्धित होती है अपितु एक-दूसरे को प्रभावित करती है।

जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है तो हिन्दी स्वयं में वैज्ञानिक रूप से प्रमाणिक होने के कारण स्वयं में प्रभावशाली भाषा है, इसकी सरसता एवं सहजता का ही परिणाम है कि इसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना निहित है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार हिन्दी अपने आँचल में समस्त भारतीय संस्कृति को समाहित किए हुए है। हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की संवाहिका भी है। यह हमारी संस्कृति का विश्व में साक्षात्कार कराती है, अपनी सहृदयता, सौहार्दता एवं समन्वय के गुणों के कारण हिन्दी देश की ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में बसे भारतवंशियों के बीच संपर्क भाषा का दायित्व निर्वाह भी कर रही है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से ही नहीं अपितु क्षेत्र विस्तार, साहित्य समृद्धि एवं शब्द सामर्थ्य की दृष्टि से भी यह विश्व की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है।

भाषा को संस्कृति की संवाहिका भी कहा जाता है, भाषा का सम्बन्ध व्यक्ति की आस्था, उसके विश्वास, उसके समग्र परिवेश से होता है, विश्व के सभी देशों में भारत की पहचान यदि किसी भाषा से है तो वह भाषा केवल और केवल हिन्दी है। भारतीय दर्शन में शब्द को ब्रहम का स्वरूप माना गया है। भारत में सरस्वती के तट पर विश्व में पहली बार शब्द प्रकट हुआ, कुछ विचारक शब्द की उत्पत्ति शिव के नाद से भी मानते हैं। इस शब्द में भाषा बनी जो वैदिक संस्कृत के रूप में प्रचलित हुई, संस्कृत की अक्षर ऊर्जा से संसार में अनेक बोलियां एवं भाषाओं का विकास हुआ, भारत में वह वैदिक से लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश से होकर हिन्दी बनी।

भाषा कोई भी हो अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम होती है। भाषा सभ्यता, संस्कृति एवं मनोविचारों का बिम्ब होती है, भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर अनुकूलताओं से भाषान्तरण हुआ माना जाता है तथापि मानव जाति समान होने के कारण मनुष्य एवं उसके परिवेश की प्रभावशीलता उसकी मनोकूलता एवं इन्द्रियों और कर्मन्द्रियों से अनुभव किया गया ज्ञान समान होता है। यही कारण है कि भाषायी अन्तर होने पर भी प्रत्येक भाषा एक-दूसरे से न केवल सम्बन्धित होती है अपितु एक-दूसरे को प्रभावित करती है।

जहाँ तक हिन्दी का प्रश्न है तो हिन्दी स्वयं में वैज्ञानिक रूप से प्रमाणिक होने के कारण स्वयं में प्रभावशाली भाषा है, इसकी सरसता एवं सहजता का ही परिणाम है कि इसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना निहित है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार हिन्दी अपने आँचल में समस्त भारतीय संस्कृति को समाहित किए हुए है। हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति की संवाहिका भी है। यह हमारी संस्कृति का विश्व में साक्षात्कार कराती है, अपनी सहृदयता, सौहार्दता एवं समन्वय के गुणों के कारण हिन्दी देश की ही

नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में बसे भारतवंशियों के बीच संपर्क भाषा का दायित्व निर्वाह भी कर रही है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से ही नहीं अपितु क्षेत्र विस्तार, साहित्य समृद्धि एवं शब्द सामर्थ्य की दृष्टि से भी यह विश्व की किसी भी भाषा से कमतर नहीं है।

भाषा को संस्कृति की संवाहिका भी कहा जाता है, भाषा का सम्बन्ध व्यक्ति की आस्था, उसके विश्वास, उसके समग्र परिवेश से होता है, विश्व के सभी देशों में भारत की पहचान यदि किसी भाषा से है तो वह भाषा केवल और केवल हिन्दी है। भारतीय दर्शन में शब्द को ब्रहम का स्वरूप माना गया है। भारत में सरस्वती के तट पर विश्व में पहली बार शब्द प्रकट हुआ, कुछ विचारक शब्द की उत्पत्ति शिव के नाद से भी मानते हैं। इस शब्द में भाषा बनी जो वैदिक संस्कृत के रूप में प्रचलित हुई, संस्कृत की अक्षर ऊर्जा से संसार में अनेक बोलियां एवं भाषाओं का विकास हुआ, भारत में वह वैदिक से लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश से होकर हिन्दी बनी। हिन्दी और हिन्दुस्तान नाम सिंधु नदी ने हमें दिये हैं।

हिन्दी शब्द का प्रयोग भाषा के लिए कब से किया जाने लगा इसका कोई प्रमाणिक आधार उपलब्ध नहीं है। माना जाता है कि 326 ई.पू. के बाद जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया और सेल्यूकस अपने साथ मेगस्थनीज को लाया तभी से हमें पहली बार भारतीय इतिहास का कुछ ठोस आधार मिलता है। इससे पहले का इतिहास पौराणिक और वैदिक कथाओं के तन्नुजाल में ढ़का हुआ है, जहाँ तक हिन्दी के अविर्भाव एवं भाषायी परिवर्तन का इतिहास है तो इसके लिए विद्वानों द्वारा साहित्यिक कृतियों की छनन से प्राप्त सामग्री पर ही संतोष करना वर्तमान की विवशता है। यह भी माना जाता है कि भाषा का शास्त्रीय अध्ययन सर्वप्रथम भारत में प्रारम्भ हुआ। 800 वर्ष ई.पू. में यास्क ने निघण्टू और निरूक्तियों की रचना कर भाषा को एक ठोस संरचना प्रदान की लेखन कला का परिचय न होने के कारण पूर्व की वैदिक भाषा केवल मौखिक रूप में ही प्रयोग होती थी। 600 वर्ष ई.पू. महर्षि पाणिनि द्वारा दिये गये व्याकरण में संस्कृत का प्रभाव था जो कर्मकाण्ड के निमित्त उत्तरी विभाषा के रूप में उभरी थी। 600 ई.पू. से 600 ईस्वी के मध्य का समय प्राकृत काल माना जाता है। पहली शताब्दी में प्राकृत ही साहित्य भाषा थी। पाली, प्राकृत, शौरसैनी,अर्द्धमागधी और अप्रभ्रंश से होते हुए हिन्दी स्वरूप बना। हिन्दी के विकासक्रम में हिन्दुई, हिन्दवी, दक्खिनी, उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी तथा हिन्दुस्थानी नाम समयचक्र के अनुसार आया है।

जहाँ तक हिन्दी पर पाश्चात्य अथवा अन्य भाषाओं के प्रभाव का प्रश्न है तो इससे बड़ी बात और क्या होगी कि स्वयं हिन्दी शब्द फारसी शब्द है। हिन्दी शब्द का विकास आठवीं शताब्दी में ईरान में हुआ। वैसे विश्व में शायद ही कोई भाषा होगी जिस पर किसी न किसी रूप में दूसरी भाषा का प्रभाव न पड़ा हो। हिन्दी पर भी संस्कृत आदि प्राचीन; पश्तो, तुर्की, फारसी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, स्पैनिश, रूसी, अंग्रेजी आदि विदेशी तथा स्वदेशी भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। वैसे तो ध्वनि, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के प्रभाव एवं प्रयोग से भाषा समृद्धि होती है किन्तु सबसे अधिक प्रयोग शब्द समूह का पड़ता है। उदाहरण के लिए हिन्दी के एक शब्द पिता को संस्कृत में पितृ आधुनिक अंग्रेजी में फादर, पुरानी अंग्रेजी में फायडर, डैनिश और स्वीडिश में फेडर, लैटिन और ग्रीक में पेटर, फारसी में पिदर तथा अवेस्ता में पितर कहते हैं। इसीलिए यह मान्यता रही है कि एक से दूसरी भाषा की ओर आने-जाने से भाषायी विस्तार होता है। आज हिन्दी ने इस सूत्र को और अधिक महत्व दे दिया है। क्योंकि आज का समय दो भाषा वाला समय है, एक मातृ या स्थानीय भाषा और दूसरे ग्लोबल व्यवसाय की भाषा। यही कारण है कि तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों के साथ विदेशी शब्दों को वर्तमान से नहीं अपितु प्रारंभ से ही हिन्दी ने आत्मसात कर लिया था। केवल भाषा ही नही अपितु विदेशी या पाश्चात्य भाषाविदों ने भी हिन्दी के ऊर्ध्वगामी उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ईरान के बादशाह

नौशेखां (531-579 ई.) ने पंचतंत्र का अनुवाद कराया तथा इसकी भाषा को जबा-ए-हिन्दी कहा। फारसी कवि औफी ने भारत की भाषा को हिन्दवी कहा।

18वीं शताब्दी हिन्दी के लिए महत्वपूर्ण सौगात लेकर आयी। सन 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई, जिससे जुड़े गिलक्राइस्ट ने हिन्दी, हिन्दवी, हिन्दुस्तानी तथा उर्दू शब्दों का प्रचलन नये अर्थों में प्रारंभ किया। सन् 1812 में गिलक्राइस्ट तथा 1824 में विलियम प्राइस ने हिन्दी प्रोफेसर के रूप में हिन्दी को नया मार्ग दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर्स ने 29.9.1830 के पत्र में लिखा कि कम्पनी के अधिकारी भारत की भाषा सीखें। उत्तर पश्चिमी मार्गों से आये यूरोपियों ने इसे हिन्दुस्तानी नाम दिया, ऐतिहासिक साक्ष्य गवाह है कि इसका विस्तार अनेक रूपों में हिन्देशियों, मलेशिया, चीन से लेकर जापान, कोरिया और मंगोलिया तक फैल गई, विद्वान मैक्समूलर, सिल्वालेवी, श्लेगल, ए.बी. दीथ आदि ने हिन्दी को विश्व की सर्वाधिक व्यवहृत भाषा स्वीकारते हुए यूरोप में प्राच्य विद्या अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम होती है। भाषा सभ्यता, संस्कृति एवं मनोविचारों का बिम्ब होती है, भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर अनुकूलताओं से भाषान्तरण हुआ माना जाता है तथापि मानव जाति समान होने के कारण मनुष्य एवं उसके परिवेश की प्रभावशीलता उसकी मनोकूलता एवं इन्द्रियों और कर्मन्द्रियों से अनुभव किया गया ज्ञान समान होता है। यही कारण है कि भाषायी अन्तर होने पर भी प्रत्येक भाषा एक-दूसरे से न केवल सम्बन्धित होती है अपितु एक-दूसरे को प्रभावित करती है।

भाषा को संस्कृति की संवाहिका भी कहा जाता है, भाषा का सम्बन्ध व्यक्ति की आस्था, उसके विश्वास, उसके समग्र परिवेश से होता है, विश्व के सभी देशों में भारत की पहचान यदि किसी भाषा से है तो वह भाषा केवल और केवल हिन्दी है।

भारतीय दर्शन में शब्द को ब्रहम का स्वरूप माना गया है। भारत में सरस्वती के तट पर विश्व में पहली बार शब्द प्रकट हुआ, कुछ विचारक शब्द की उत्पत्ति शिव के नाद से भी मानते हैं। इस शब्द में भाषा बनी जो वैदिक संस्कृत के रूप में प्रचलित हुई, संस्कृत की अक्षर ऊर्जा से संसार में अनेक बोलियां एवं भाषाओं का विकास हुआ, भारत में वह वैदिक से लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश से होकर हिन्दी बनी। हिन्दी और हिन्दुस्तान नाम सिंधु नदी ने हमें दिये हैं।

हिन्दी शब्द का प्रयोग भाषा के लिए कब से किया जाने लगा इसका कोई प्रमाणिक आधार उपलब्ध नहीं है। माना जाता है कि 326 ई.पू. के बाद जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया और सेल्यूकस अपने साथ मेगस्थनीज को लाया तभी से हमें पहली बार भारतीय इतिहास का कुछ ठोस आधार मिलता है। इससे पहले का इतिहास पौराणिक और वैदिक कथाओं के तन्नुजाल में ढ़का हुआ है, जहाँ तक हिन्दी के अविर्भाव एवं भाषायी परिवर्तन का इतिहास है तो इसके लिए विद्वानों द्वारा साहित्यिक कृतियों की छनन से प्राप्त सामग्री पर ही संतोष करना वर्तमान की विवशता है। यह भी माना जाता है कि भाषा का शास्त्रीय अध्ययन सर्वप्रथम भारत में प्रारम्भ हुआ। 800 वर्ष ई.पू. में यास्क ने निघण्टू और निरूक्तियों की रचना कर भाषा को एक ठोस संरचना प्रदान की लेखन कला का परिचय न होने के कारण पूर्व की वैदिक भाषा केवल मौखिक रूप में ही प्रयोग होती थी। 600 वर्ष ई.पू. महर्षि पाणिनि द्वारा दिये गये व्याकरण में संस्कृत का प्रभाव था जो कर्मकाण्ड के निमित्त उत्तरी विभाषा के रूप में उभरी थी। 600 ई.पू. से 600 ईस्वी के मध्य का समय प्राकृत काल माना जाता है। पहली शताब्दी में प्राकृत ही साहित्य भाषा थी। पाली, प्राकृत, शौरसैनी,अर्द्धमागधी और अप्रभ्रंश से होते हुए हिन्दी स्वरूप बना। हिन्दी के विकासक्रम में हिन्दुई, हिन्दवी, दक्खिनी, उर्दू, रेख्ता, हिन्दुस्तानी तथा हिन्दुस्थानी नाम समयचक्र के अनुसार आया है।

पुस्तकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

जहाँ तक हिन्दी पर पाश्चात्य अथवा अन्य भाषाओं के प्रभाव का प्रश्न है तो इससे बड़ी बात और क्या होगी कि स्वयं हिन्दी शब्द फारसी शब्द है। हिन्दी शब्द का विकास आठवीं शताब्दी में ईरान में हुआ। वैसे विश्व में शायद ही कोई भाषा होगी जिस पर किसी न किसी रूप में दूसरी भाषा का प्रभाव न पड़ा हो। हिन्दी पर भी संस्कृत आदि प्राचीन; पश्तो, तुर्की, फारसी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, स्पैनिश, रूसी, अंग्रेजी आदि विदेशी तथा स्वदेशी भाषाओं का प्रभाव पड़ा है। वैसे तो ध्वनि, उपसर्ग, प्रत्यय आदि के प्रभाव एवं प्रयोग से भाषा समृद्धि होती है किन्तु सबसे अधिक प्रयोग शब्द समूह का पड़ता है। उदाहरण के लिए हिन्दी के एक शब्द पिता को संस्कृत में पितृ आधुनिक अंग्रेजी में फादर, पुरानी अंग्रेजी में फायडर, डैनिश और स्वीडिश में फेडर, लैटिन और ग्रीक में पेटर, फारसी में पिदर तथा अवेस्ता में पितर कहते हैं। इसीलिए यह मान्यता रही है कि एक से दूसरी भाषा की ओर आने-जाने से भाषायी विस्तार होता है। आज हिन्दी ने इस सूत्र को और अधिक महत्व दे दिया है। क्योंकि आज का समय दो भाषा वाला समय है, एक मातृ या स्थानीय भाषा और दूसरे ग्लोबल व्यवसाय की भाषा। यही कारण है कि तत्सम, तद्भव तथा देशज शब्दों के साथ विदेशी शब्दों को वर्तमान से नहीं अपितु प्रारंभ से ही हिन्दी ने आत्मसात कर लिया था। केवल भाषा ही नही अपितु विदेशी या पाश्चात्य भाषाविदों ने भी हिन्दी के ऊर्ध्वगामी उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ईरान के बादशाह नौशेखां (531-579 ई.) ने पंचतंत्र का अनुवाद कराया तथा इसकी भाषा को जबा-ए-हिन्दी कहा। फारसी कवि औफी ने भारत की भाषा को हिन्दवी कहा।

18वीं शताब्दी हिन्दी के लिए महत्वपूर्ण सौगात लेकर आयी। सन 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई, जिससे जुड़े गिलक्राइस्ट ने हिन्दी, हिन्दवी, हिन्दुस्तानी तथा उर्दू शब्दों का प्रचलन नये अर्थों में प्रारंभ किया। सन् 1812 में गिलक्राइस्ट तथा 1824 में विलियम प्राइस ने हिन्दी प्रोफेसर के रूप में हिन्दी को नया मार्ग दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ डॉयरेक्टर्स ने 29.9.1830 के पत्र में लिखा कि कम्पनी के अधिकारी भारत की भाषा सीखें। उत्तर पश्चिमी मार्गों से आये यूरोपियों ने इसे हिन्दुस्तानी नाम दिया, ऐतिहासिक साक्ष्य गवाह है कि इसका विस्तार अनेक रूपों में हिन्देशियों, मलेशिया, चीन से लेकर जापान, कोरिया और मंगोलिया तक फैल गई, विद्वान मैक्समूलर, सिल्वालेवी, श्लेगल, ए.बी. दीथ आदि ने हिन्दी को विश्व की सर्वाधिक व्यवहृत भाषा स्वीकारते हुए यूरोप में प्राच्य विद्या विभागों को शुरू किया।

सन् 1857 में मारीशस में पहूँची हिन्दी आज वहां पर सबसे प्रिय मानी जाती है। फीजी में वहां की संविधान की धारा 56 के अनुसार वहां की सदन की राजभाषा अंग्रेजी है किन्तु कोई सदस्य यदि बोलना चाहे तो वह फिजियन अथवा हिन्दी में बोल सकता है। इन्डोनेशिया की भाषा का तो नाम ही भाषा इन्डोनेशिया है। इसमें 18 प्रतिशत शब्द हिन्दी के ही हैं, यहां के मार्ग में आवश्यकतानुसार बोर्ड पर भय लिखा मिल जाता है। यहां के तीनों सेनाओं के संयुक्त समाचार पत्र का नाम 'त्रिशक्ति' है। चीन का पेइचिंग रेडियो स्टेशन प्रतिदिन हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित करता है। वहां की 'सचित्र चीन' पत्रक का हिन्दी रूपान्तरण पिछले तीस वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। चीन की स्वागत शिला पर लिखा 'ओम नमो भगवते' वहां के भाषायी परिवेश के हिन्दी में मधुर सम्बन्धों को दर्शाता है। श्रीलंका में उच्चस्तर पर तो पाकिस्तान में लोक सेवा आयोग में हिन्दी की वैकल्पिकता इसका एक अच्छा उदाहरण है।

हिन्दी भाषा पर पाश्चात्य भाषाओं के प्रभाव के इसी क्रम में यह बताना भी पूर्ण औचित्य है कि हिन्दी के टाइप तथा शब्दकोष भी पाश्चात्य विद्वानों की पहल का परिणाम है। नागरी टाइप ढालने का कार्य सर्वप्रथम यूरोप में आरम्भ हुआ। सन 1667 में आथानासी किरचरी की कृति चाइना इलेस्ट्रेटा में इसका प्रयोग हुआ। पंचानन कर्मकार ने चार्ल्स विलिफिन्स की सहायता से भारत में बंगाल में टाइप ढलाई का कार्य शुरू

हुआ। यह कार्य 1770 के समय में हुआ। इसी क्रम में यह बताना भी समसामयिक होगा कि हिन्दी की समद्धि में महत्वपूर्ण माने जाने वाले शब्द कोष निर्माण में पहला प्रयास हिन्दुस्तानी अंग्रेजी तथा अंग्रेजी हिन्दुस्तानी रोमन लिपि कोष सन 1773 में जे. फर्ग्यूसन ने लंदन से प्रकाशित कराया। सन 1790 में हेनरी ने भी मद्रास से ऐसा ही कोष प्रकाशित कराया। सन् 1808 में जोसेफ टेलर तथा विलियम हंटर ने कलकत्ते से हिन्दुस्तानी कोष प्रकाशित किया, सन् 1810 में गिलक्राइस्ट, 1817 में जे. शेक्सपियर ने रोमन में हिन्दी कोष प्रकाशित करके हिन्दी के उत्थान में बड़ा योगदान दिया। सन् 1830 में पादरी एम.टी.एडस ने पहली बार देवनागरी आखरों का कोष कलकत्ता से प्रकाशित किया। कलकत्ता स्कूल ऑफ सोसायटी ने पहली बार बनारस से हिन्दी शब्दों के हिन्दी में अर्थ वाले शब्दकोष प्रकाशित किये। उन्नीसवीं शताब्दी के पहले दशक में गिलक्राइस्ट ने हिन्दी व्याकरण तथा पादरी एथरिटन का भाषा भास्कर प्रकाशित किया।

जहाँ तक हिन्दी भाषा की समृद्धि का प्रश्न है तो हिन्दी स्वयं में परिस्कृत प्रक्रिया के फलस्वरूप बनी भाषा है। इसमें तत्सम, तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्दों का अंबार लगा है। हिन्दी ने अतिरिक्त शब्दों को हर दृष्टि से सहर्ष स्वीकार किया है। ये शब्द केवल और केवल हिन्दी के ही बन कर रहे गये हैं। ये शब्द अरबी, फारसी, तुर्की और पश्तो मुसलमानी प्रभाव युक्त शब्द और पुर्तगाली, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी यूरोपीय प्रभव युक्त शब्द हैं। इस प्रकार देखें तो हिन्दी की समृद्धि विदेशी शब्दों विशेषकर पाश्चात्य भाषा के स्नेह से अधिक परिपम्ब हुई है। किसी ने ठीक ही कहा है-

"अखिल विश्व में हिन्दी गूँजे, यही हमारा नारा है।
हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा, हिन्दुस्तां हमारा है।।"

****